# अध्याय - 6

# रूप विचार

वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं। ये पद नाना रुपों में दिखाई-देते हैं। इसलिए इन्हें रूप भी कहते हैं।

पद बनते समय मूल शब्द में कभी-कुछ परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल आदि के कारण हो जाता है।

जैसे – लिंग के कारण - लड़का जाता है। लड़की जाती है।

वचन के कारण - अच्छा बच्चा पढ़ता है अच्छे बच्चे पढ़ते हैं।

कारक के कारण - मैं गया। मुझे जाना पड़ा।

पुरुष के कारण - मैं नाचूँगी। वे नाचेंगे।

काल के कारण - वह खाता है। उसने खाया।

कभी-कभी वाक्य में पद बनने पर मूल शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे - वह जरूर आएगा।

मेज के नीचे बिल्ली है।

मनोज और सरोज पढ़ रहे हैं।

वाह ! तुमने कितना अच्छा गाया।

अतएव रूप परिवर्तन की दृष्टि से पद दो प्रकार के हैं। जिन पदों का रूप परिवर्तित होता है, वे विकारी हैं, जिनका नहीं होता वे अविकारी हैं।

**विकारी पदों के चार भेद हैं :**

(१) संज्ञा (विशेष्य) (२) सर्वनाम, (३) विशेषण, (४) क्रिया

**अविकारी पदों के भी चार भेद हैं :**

(१) क्रिया-विशेषण, (२) संबंधबोधक, (३) समुच्चयबोधक, (४) विस्मयादिबोधक

इन्हें अव्यय भी कहते हैं।

# संज्ञा

किसी व्यक्ति, जाति, द्रव्य, समूह और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं । इसके पाँच भेद होते हैं – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक भाववाचक ।

(i) **व्यक्तिवाचक संज्ञा** : इससे केवल एक का बोध होता है, जैसे– राम, ऐरावत, कटक, भारत, बिंध्य, महानदी, कपिला, कामायनी आदि ।

(ii) **जातिवाचक संज्ञा** : इससे एक ही प्रकार की एकाधिक व्यक्तियों, वस्तुओं का यानी पूरी जाति का बोध होता है, जैसे – पुरुष, स्त्री, बालक, लड़की, कोयल, घोड़ा, पशु, पक्षी, पहाड़, किताब, कुर्सी, कवि, शिक्षिका आदि ।

(iii) **द्रव्यवाचक संज्ञा** : इनसे किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है, जिसे हम केवल माप या तौल सकते हैं, पर गिन नहीं सकते । द्रव्य नवनिर्माण के आधार होते हैं । जैसे - ताँबा, सोना, चाँदी, तेल, दूध, पानी, आटा, चावल, लकड़ी आदि ।

(iv) **समूहवाचक संज्ञा** : इससे अनेक प्राणियों या वस्तुओं के समूह का बोध होता है जैसे - दल, परिवार, गुच्छा, झुण्ड, कुटुम्ब, पुंज, कक्षा, टोली, भीड़, मण्डली, सभा, सेना आदि ।

(v) **भाववाचक संज्ञा** : इससे भाव, दशा, अवस्था, धर्म, गुण या क्रियाव्यापार का बोध होता हैं, जैसे - क्रोध, बहाव, सौंदर्य, प्रेम, बचपन, बुढ़ापा, टहलना, रोना, लम्बाई, घृणा, ममता, प्रार्थना, पढ़ाई, लिखावट आदि ।

## भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण

**कुछ भाववाचक संज्ञाएँ मूल रूप में होती हैं; जैसे -** प्रेम, घृणा, झूठ, सच, उत्साह, साहस, लोभ ।

**कुछ भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय से बनती हैं । ये हैं –**

**(क) संज्ञा से** : लड़का – लड़कपन, मनुष्य – मनुष्यता, साधु – साधुता

(ख) **विशेषण से** : खट्टा – खटास, सुन्दर – सौंदर्य/सुंदरता, अच्छा – अच्छाई, गरीब – गरीबी, काला – कालापन, सफेद – सफेदी, बूढ़ा – बुढ़ापा

(ग) **सर्वनाम से** : मम – ममता/ममत्व, अहं – अहंकार, आप – आपा, अपना – अपनापन, निज – निजत्व

(घ) **क्रिया से** : मारना – मार, पढ़ना – पढ़ाई, लिखना – लिखावट, चिल्लाना – चिल्लाहट, बचाना – बचाव, कृ – कार्य

(ङ) **अव्यय से** : दूर – दूरी, निकट – निकटता, अधीन – अधीनता, शाबाश – शाबाशी, समीप – सामीप्य

टहलना, रोना, पढ़ना, आदि क्रियार्थक संज्ञाएँ भी भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आती हैं जैसे -

सवेरे टहलना स्वास्थ के लिए अच्छा है ।

हर समय रोने से काम नहीं चलेगा ।

आपके आने की सूचना पाकर मैं पढ़ने लगा ।

# अभ्यास

1. संज्ञा किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद होते हैं ?
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा से क्या बोध होता है ? पाँच उदाहरण दीजिए ।
3. जातिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? पाँच उदाहरण दीजिए ।
4. **निम्नलिखित शब्दों में से भाववाचक संज्ञाओं को छाँटिए-**

   मोहन, कायरता, चौड़ाई, केला, लड़कपन, फूल, पहाड़, घृणा, पढ़ना, औरत, कमला, कढ़ाई
5. समूहवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? सोदाहरण बताइए ।
6. **नीचे (क) में कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ और (ख) में कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ दी गयी हैं - उनका मिलान कीजिए :**

   (क) चेतक, कामायनी, महेश, कोलकाता, रीता, ऋषिकुल्या, हरिश्चन्द्र

   (ख) पुरुष, राजा, घोड़ा, पुस्तक, नदी, लड़की, शहर

**7. नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :**

कमजोर, पढ़, दूर, मानव, साधु, काला, आतुर, अपना, ऊँचा, झगड़

**8. नीचे कुछ द्रव्यवाचक संज्ञाएँ और भाववाचक संज्ञाएँ मिलकर आयी हैं, उनको अलग-अलग छाँटिए :**

मछली, आनंद, तेल, मधुरता, पानी, धैर्य, चाय, ममता, घी, कड़वाहट, लोहा, शराब, मिठास, शैशव, हर्ष, सिलाई, आटा, नमक, सोना, लकड़ी

**9. नीचे दिए गए वाक्यों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं को छाँटकर अलग-अलग लिखिए :**

रमेश दसवीं कक्षा का छात्र है । वह अपने गाँव के जवाहर विद्यापीठ में पढ़ता है । वह क्रीड़ासंघ का सदस्य भी है । लिखाई-पड़ाई में भी वह रुचि रखता है । शिक्षक उसे बहुत प्यार करते हैं । वह अपने परिवार में दाल-रोटी खाकर खुशी से रहता है ।

**10. नीचे दी गई सारणी में कुछ शब्द और उनसे संबंधित भाववाचक संज्ञाएँ दी गई हैं । उनका मिलान कीजिए :**

| शब्द | भाववाचक संज्ञा | शब्द | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|---|
| उड़ना | मिलावट | पीटना | बचपन |
| मूर्ख | कड़वाहट | बूढ़ा | कवित्व |
| पागल | धमकी | बच्चा | सजावट |
| कड़वा | मूर्खता | पुरुष | हार |
| मिलना | उड़ान | कवि | वीरत्व |
| बुरा | पागलपन | सजाना | पौरुष |
| धमकाना | बुराई | वीर | बुढ़ापा |
| | | हारना | पिटाई |

# लिंग

पुरुष या स्त्री की पहचान उसके लिंग से होती है । लिंग का अर्थ है – चिह्न, लक्षण या निशान । पुरुष जाति के प्राणी को पुंलिंग और स्त्री जाति के प्राणी को स्त्रीलिंग माना जाता है ।

हम जानते हैं कि **हिन्दी में प्रत्येक संज्ञा शब्द या तो पुंलिंग में होता है, या स्त्री लिंग में ।**

प्रत्येक संज्ञा शब्द का लिंग जानना इसलिए जरूरी है कि कर्ता या कर्म के रूप में प्रयुक्त संज्ञा-शब्द के लिंग के अनुसार क्रिया-पद बनता है, जैसे –

| | |
|---|---|
| राम जाता है । | सीता जाती है । |
| रामने रोटी खायी । | सीता ने फल खाया । |
| हवा चलती है । | पवन बह रहा है । |

मनुष्य और अन्य प्राणियों का लिंग जानना आसान है, क्योंकि प्राकृतिक रूप से वे पुरुष-स्त्री या नर-मादा होते हैं; जैसे –

| **पुंलिंग शब्द** | **स्त्रीलिंग शब्द** | **पुंलिंग शब्द** | **स्त्रीलिंग शब्द** |
|---|---|---|---|
| नर | नारी | कुत्ता | कुतिया |
| घोड़ा | घोड़ी | शेर | शेरनी |
| बालक | बालिका | बैल | गाय |
| बाघ | बाघिन | लड़का | लड़की |
| पिता | माता | पति | पत्नी |
| पुत्र | कन्या | हिरन | हिरनी |
| माली | मालिन | राजा | रानी |

लेकिन कुछ प्राणिवाचक शब्द हैं, जिनके स्त्रीलिंग रूप नहीं हैं, जैसे –

उल्लू, केंचुआ, कौआ, कछुआ, खरगोश, तोता, नेवला, भेड़िया, मच्छर ।

कुछ ऐसे प्राणिवाचक शब्द हैं, जिनके पुंलिंग रूप नहीं हैं; जैसे –

कोयल, गिलहरी, चील, जोंक, जूँ, तितली, मकड़ी, मक्खी, मछली, मैना ।

ऐसे नित्य पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्दों में नर, मादा शब्द जोड़कर लिंग स्पष्ट किया जाता है, जैसे –

नर कौआ – मादा कौआ नर कोयल – मादा कोयल

अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग जानने के लिए रूप, अर्थ और शब्दांत मात्रा पर विचार करना पड़ता है । लिंग जानने के लिए मुख्यत: प्रयोग और अभ्यास की जरूरत है । फिर भी हम कुछ तरीके अपनाते हैं । ये हैं –

(i) शब्द के बहुवचन रूप के आधार पर लिंग-निर्णय ।

(ii) अर्थ के आधार पर लिंग-निर्णय ।

(iii) शब्दांत स्वर या प्रत्यय के आधार पर लिंग-निर्णय ।

**बहुवचन रूप के आधार पर लिंग-निर्णय :**

(1) जिन अप्राणिवाचक अकारांत संज्ञा शब्दों का रूप बहुवचन में नहीं बदलता, अर्थात् एकवचन तथा बहुवचन दोनों में एक-सा रूप रहता है, वे शब्द पुंलिंग हैं, जैसे – भात, तेल, पवन, जल, खेत, दाँत, बाजार, खेल, सामान, मकान, माल, अनाज, जवाब, पेड़, नमक, गुलाब, शरीर, ग्रंथ, काल, नाम आदि ।

(2) जिन अप्राणिवाचक अकारांत संज्ञा शब्दों का अंतिम 'अ' का बहुवचन में 'एँ' हो जाता है, वे शब्द स्त्री लिंग हैं; जैसे – बात, ईंट, रात, राह, सड़क, लाश, नस, ईख, दाल, आदत, इमारत, लात, डाल, दुकान, फसल, कोशिश, साँस, किताब, पुस्तक, कीमत, सरकार, सुबह, तस्वीर, आफत, कमर, मूँछ, कमीज, झील, मेज, चीज, बंदूक आदि ।

(3) जिन अप्राणिवाचक आकारांत संज्ञा शब्दों का अंतिम 'आ' बहुवचन में 'ए' हो जाता है, वे शब्द पुंलिंग हैं; जैसे – मेला, ताला, कपड़ा, मसाला, कचरा, अँगूठा, काँटा, सीसा, चना, कमरा, लोटा, छाता, रास्ता, परदा, जूता, कुरता, पराठा, चौराहा, दरवाजा आदि ।

(4) जिन अप्राणिवाचक आकारांत संज्ञा शब्दों के बहुवचन में 'एँ' जुड़ता है, वे शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे – आशा, उपमा, हवा, सेना, लता, कथा, शाखा, सभा, इच्छा, योजना, दिशा, विद्या, सूचना, परीक्षा, कविता, भाषा, क्रिया, संख्या, रचना, सजा, दवा, घटना आदि ।

(5) जिन अप्राणिवाचक इ/ईकारांत संज्ञा शब्दों के रूप बहुवचन में नहीं बदलते, वे शब्द पुंलिग हैं, जैसे – गिरि, अतिथि, मोती, पानी, जलधि, जी, घी ।

(6) जिन अप्राणिवाचक इ/ईकारांत संज्ञा शब्दों की अंतिम इ/ई बहुवचन में 'याँ' हो जाती है, वे शब्द स्त्री लिंग हैं, जैसे – नदी, मक्खी, चूड़ी, जाति, तिथि, रीति, नीति, विधि, खिड़की, समाधि, गली, लड़ाई, उपाधि, मिठाई, रोटी, पूड़ी, जलेबी, पकौड़ी, उँगली, टोपी, बीमारी, चपाती, सब्जी आदि ।

(7) जिन उ/ऊ/ओकारांत संज्ञा शब्दों का रूप बहुवचन में नहीं बदलता, वे शब्द पुंलिंग हैं; जैसे – शिशु, लड्डू, आलू, रेडियो

(8) जिन उ/ऊ/ओकारांत संज्ञा शब्दों को बहुवचन में 'एँ' हो जाता है, वे शब्द स्त्री लिंग में हैं; जैसे – ऋतु, वस्तु, झाड़ू, लू, गौ ।

**नोट :** वचन अध्याय में शब्दों के रूप दिए गए हैं । उन्हें देखें और शब्दों के रूपों को जान लें ।

## अर्थ के आधार पर लिंग-निर्णय :

### पुंलिंग शब्द :

प्राय : अनाजों, खाद्यपदार्थों, फलों, वृक्षों, धातुओं, रत्नों, ग्रहों और द्रव पदार्थों के नाम पुंलिंग होते हैं; जैसे – धान, गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, पराठा, भात, हलवा, लड्डू, पेड़ा, अनार, अँगूर, आम, केला, पपीता, बरगद, पीपल, नीम, गुलाब, सोना, पीतल, ताँबा, लोहा, काँसा, हीरा, मोती, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, तारा, सूर्य, घी, पानी, दूध, तेल, दही आदि ।

पर इनमें से कुछ स्त्रीलिंग में आते हैं; जैसे – अरहर, मूँग, मकई, रोटी, दाल, सब्जी, तरकारी, पूड़ी, कचौड़ी, जलेबी, लीची, ककड़ी, इमली, मौलसिरी, चाँदी, मणि, पृथ्वी, चाय, कॉफी, शराब, छाछ आदि ।

**स्त्रीलिंग शब्द :**

प्राय: नदियों, नक्षत्रों, भाषाओं, तिथियों के नाम स्त्रीलिंग में होते हैं; जैसे – महानदी, गंगा, रोहिणी, विशाखा, हिन्दी, ओड़िआ, संस्कृत, अंग्रेजी, प्रतिपदा, तीज, अमावास्या, पूर्णिमा आदि ।

पर इनमें से कुछ पुंलिंग में आते हैं; जैसे – ब्रह्मपुत्र, सिंधु, शोण

## शब्दांत अक्षर या प्रत्यय के आधार पर लिंग-निर्णय

**पुंलिंग शब्द :**

- जिन तत्सम शब्दों के अंत में अ, अन, त्व, त्य, य, आय, आर, आस हों, वे शब्द पुंलिंग होते हैं; जैसे – त्याग, कौशल, नयन, गुरुत्व, नृत्य, सौंदर्य, अन्याय, संसार, विकार, विलास, उल्लास आदि ।

- जिन तद्भव शब्दों के अंत में – आ, आव, ना, पा, पन हों, वे शब्द पुंलिंग होते हैं; जैसे – आटा, कपड़ा, बहाव, भुलावा, जागना, पढ़ना, बुढ़ापा, बचपन, भोलापन आदि ।

**स्त्रीलिंग शब्द :**

- जिन तत्सम शब्दों के अंत में आ, ना, इ, इमा, ता हों, वे शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे – पूजा, प्रार्थना, कामना, शिक्षा, छवि, कृषि, कालिमा, महिमा, एकता, साधुता ।

- जिन तद्भव शब्दों के अंत में अ, आई, ई, इया, अन, वट, हट हों वे शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे – भूख, बचत, बात, लड़ाई, पढ़ाई, चिट्ठी, रोटी, खटिया, जलन, बनावट, लिखावट, कड़वाहट, आहट आदि ।

# शब्दों का लिंग-परिवर्तन

शब्द के रूप को पुंलिंग या स्त्रीलिंग में बदला जा सकता है। उसके लिए कुछ निश्चित नियम हैं। नीचे उनका उल्लेख किया गया है।

(1) अकारांत शब्दों में 'आ' जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| वृद्ध | वृद्धा | पूज्य | पूज्या |
| शिष्य | शिष्या | सुत | सुता |
| अध्यक्ष | अध्यक्षा | छात्र | छात्रा |

(2) अकारांत शब्दों में 'ई' जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| देव | देवी | गोप | गोपी |
| पुत्र | पुत्री | दास | दासी |
| हिरन | हिरनी | कबूतर | कबूतरी |

(3) आकारांत शब्दों में 'ई' जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| लड़का | लड़की | बेटा | बेटी |
| घोड़ा | घोड़ी | भतीजा | भतीजी |
| मामा | मामी | बकरा | बकरी |

(4) आकारांत शब्दों में 'इया' जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| कुत्ता | कुतिया | बुड्ढ़ा | बुढ़िया |
| बेटा | बिटिया | बंदर | बंदरिया |
| चूहा | चुहिया | गुड्डा | गुड़िया |

(5) कुछ शब्दों के अंत में ‘इन’ जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| बाघ | बाघिन | नाती | नातिन |
| साँप | साँपिन | धोबी | धोबिन |
| नाग | नागिन | सुनार | सुनारिन |

(6) कुछ शब्दों के अंत में ‘नी’ जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| मोर | मोरनी | गरीब | गरीबनी |
| शेर | शेरनी | ऊँट | ऊँटनी |
| हाथी | हथिनी | सिंह | सिंहनी |

(7) कुछ शब्दों के अंत में ‘आनी’ जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| देवर | देवरानी | सेठ | सेठानी |
| जेठ | जेठानी | भव | भवानी |
| नौकर | नौकरानी | चौधरी | चौधरानी |

(8) शब्दांत ‘अक’ को ‘इका’ बनाकर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| लेखक | लेखिका | सहायक | सहायिका |
| पाठक | पाठिका | अध्यापक | अध्यापिका |
| बालक | बालिका | शिक्षक | शिक्षिका |

(9) कुछ शब्दों के अंत में ‘आइन’ जोड़कर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| गुरु | गुरुआइन | पण्डा | पण्डाइन |
| लाला | ललाइन | बनिया | बनियाइन |
| बाबू | बबुआइन | ठाकुर | ठकुराइन |

(10) शब्दांत वान/मान को वती/मती बनाकर –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| धनवान | धनवती | श्रीमान | श्रीमती |
| गुणवान | गुणवती | बुद्धिमान | बुद्धिमती |
| भगवान | भगवती | आयुष्मान | आयुष्मती |

(11) स्वतंत्र शब्दों का प्रयोग करके –

| पुंलिंग | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| पिता | माता | सम्राट | सम्राज्ञी |
| भाई | बहन/भाभी | पति | पत्नी |
| मर्द/आदमी | औरत | कवि | कवयित्री |
| वर | वधू | पुत्र | कन्या |
| युवक | युवती | ससुर | सास |
| बैल | गाय | बादशाह | बेगम |
| नर | मादा | राजा | रानी |
| भैंसा | भैंस | पुरुष | स्त्री |
| फूफा | फूफी/बुआ | विद्वान | विदुषी |
| साहब | मेम | ननदोई | ननद |
| ताऊ | ताई | भेड़ा | भेड़ |

# अभ्यास

1. लिंग किसे कहते हैं ? इसके भेदों का सोदाहरण परिचय दीजिए ।

2. **निम्नलिखित शब्दों का लिंग-निर्णय कीजिए :**

   कोयल, कलम, कागज, दरवाजा, खिड़की, तोता, मैना, कौआ, चाँदी, सोना, छाछ, शराब, पानी, मोती

3. **निम्नलिखित पुंलिंग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए :**

   श्रीमान, धोबी, बेटा, पाठक, सम्राट, मामा, पुत्र, साँप, भेड़ा, कवि, लाला, बंदर

4. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

   रोटी, चंद्रमा, चाँदी, बरगद, तुलसी, अंगूर, जलेबी, गुलाब, सलाह, आटा, बचपन, एकता, कुर्सी ।

5. **नीचे लिखी गई संज्ञाओं के पहले विशेषण अच्छा या अच्छी का उचित प्रयोग कीजिए :**

   अंग्रेजी, मिठाई, अनाज, दवा, मकान, कोशिश, रास्ता, जूता, टोपी, कपड़ा

6. **नीचे लिखे वाक्यों की रेखांकित संज्ञाओं के लिंग बताइए :**

   (i) <u>खरगोश</u> जोर से दौड़ता है ।

   (ii) <u>मछली</u> पानी में तैरती है ।

   (iii) <u>पवन</u> बह रहा है ।

   (iv) सुनीता <u>चाय</u> नहीं पीती ।

(v) उसने एक नया <u>मकान</u> बनवाया ।

(vi) यह कैसी <u>आफत</u> आ पड़ी है ।

(vii) उसने एक सुन्दर <u>तस्वीर</u> बनाई ।

(viii) गहरे पानी में पैठने से <u>मोती</u> मिलता है ।

(ix) अध्यक्ष ने यह <u>सूचना</u> दी है ।

(x) <u>ओड़िआ</u> मेरी मातृभाषा है ।

7. **सारणी से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य बनाइए :**

| | | |
|---|---|---|
| मुझे | हिन्दी | आती है । |
| उसने | जलेबी | खरीदी । |
| मोहन ने | आटा | खरीदा । |
| उसमें | शक्ति | थी । |
| रानू में | साहस | था । |
| नरेन ने | दूध | पीया । |
| धीरेन ने | कॉफी | पी । |
| उसकी | लिखावट | सुंदर है । |
| उसकी | पढ़ाई | चल रही है । |
| इसका | गुरुत्व | बढ़ गया है । |

●

# वचन

संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं ।

हिन्दी में वचन दो प्रकार के हैं : एकवचन और बहुवचन

**एकवचन :** एकवचन से एक व्यक्ति या पदार्थ की सूचना मिलती है ।

**बहुवचन :** बहुवचन से एक से अधिक व्यक्तियों या पदार्थों की सूचना मिलती है ।

**एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम :**

### पुंलिंग शब्द

(1) आकारांत पुंलिंग शब्द का अंतिम 'आ' बहुवचन में 'ए' हो जाता है; जैसे –

| **एकवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| लड़का | लड़के | संतरा | संतरे |
| घोड़ा | घोड़े | कुत्ता | कुत्ते |
| केला | केले | पहिया | पहिये |
| कपड़ा | कपड़े | कमरा | कमरे |

(2) 'आ' से भिन्न मात्रा (अ/इ/ई/उ/ऊ/ए/ओ) के पुंलिंग शब्द एकवचन और बहुवचन में समान रहते हैं, जैसे –

| **एकवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| मकान | मकान | साधु | साधु |
| बालक | बालक | गुरु | गुरु |
| अतिथि | अतिथि | चाकू | चाकू |
| मुनि | मुनि | लड्डू | लड्डू |
| भाई | भाई | रेडियो | रेडियो |
| हाथी | हाथी | जौ | जौ |

## स्त्रीलिंग शब्द

(1) इ/ई/इया में अंत होने वाला स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'इयाँ' हो जाता है; जैसे –

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| जाति | जातियाँ | नदी | नदियाँ |
| रीति | रीतियाँ | बकरी | बकरियाँ |
| लड़की | लड़कियाँ | बुढ़िया | बुढ़ियाँ |
| स्त्री | स्त्रियाँ | चिड़िया | चिड़ियाँ |

(विशेष : बहुवचन बनाते समय मूल शब्द की 'ई' 'इ' हो जाती है ।)

(2) इ/ई/इया से भिन्न मात्रा (अ/आ/उ/ऊ/औ) का शब्द बहुवचन में 'एँ' हो जाता है; जैसे –

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| गाय | गायें | वस्तु | वस्तुएँ |
| बहन | बहनें | ऋतु | ऋतुएँ |
| पुस्तक | पुस्तकें | बहू | बहुएँ |
| बालिका | बलिकाएँ | झाडू | झाडुएँ |
| लता | लताएँ | गौ | गौएँ |

(विशेष – बहुवचन बनाते समय मूल शब्द का 'ऊ', 'उ' हो जाता है ।)

## परसर्ग युक्त शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूप

(1) आकारांत पुंलिंग शब्द के बाद परसर्ग (ने, को, से, के, लिए, का, के, की, में, पर) आने पर अंतिम 'आ' एकवचन में 'ए' हो जाता है; जैसे –

लड़का + ने = लड़के ने

बच्चा + को = बच्चे को

पंखा + से = पंखे से

कमरा + में = कमरे में

(2) आकारांत पुंलिंग शब्दों को छोड़कर अन्य सभी पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द एकवचन में यथावत् रहते हैं; जैसे –

घर में, अतिथि को, भालू का, रेडियो पर, बहन ने, रात को, आँख से, बालिका का, बहू को, गौ के लिए

(3) इ/ईकारांत पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'यों' युक्त हो जाते हैं; जैसे – अतिथियों को, हाथियों पर, भाइयों से, विधियों की, लड़कियों में, नदियों का ।

(4) इ/ईकारांत शब्दों को छोड़कर सभी मात्रा के पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'ओं' युक्त हो जाते हैं; जैसे – घरों में, बहनों को, लड़कों से, लताओं पर, मालाओं का, बालिकाओं की ।

## संबोधन में शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूप

संबोधन करते समय आकारांत पुंलिंग शब्द एक वचन में एकारांत हो जाता है । अन्य सभी पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द एकवचन में यथावत् रहते हैं ।

इ / ईकारांत पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'यो' युक्त हो जाते हैं ।

इ / ईकारांत से भिन्न मात्रा के पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'ओ' युक्त हो जाते हैं ।

शब्द के पहले हे, रे, अरे, री, ओ, हे आदि जुड़ते हैं; जैसे –

- अरे लड़के ! ओ बेटे ! अरे बच्चे !
- हे प्रभु, रे बालक, ओ साथी, अरी बहन, हे बालिका, अरी बहू,
- हे मुनियो, हे साथियो, हे देवियो
- हे बालिकाओ, सज्जनो, मित्रो, हे बच्चो

**कुछ विशेष बातें :**

- आकारांत पुंलिंग तत्सम शब्द बहुवचन में एकारांत नहीं होते, जैसे –
  राजा, पिता, योद्धा, दाता, सखा, देवता, कर्ता, नेता, अभिनेता, महात्मा, जामाता, युवा, क्रेता, विक्रेता ।
- सम्मानास्पद रिश्तेवाचक आकारांत पुंलिंग शब्द बहुवचन में एकारांत नहीं होते; जैसे – बाबा, पापा, मामा, काका, चाचा, दादा, नाना, फूफा, जीजा ।

- कुछ आकारांत पुंलिंग हिन्दी बहुवचन में एकारांत नहीं होते; जैसे – अब्बा, खुदा, लाला, मुखिया ।
- कुछ शब्द नित्य बहुवचन में रहते है; जैसे - आँसू, ओंठ, दाम, दर्शन, प्राण, बाल, भाग्य, समाचार, हस्ताक्षर, होश ।
- कुछ शब्दो के साथ वृंद, जन, गण, दल, झुंड, वर्ग, लोग और समूह आदि शब्द जोड़कर बहुवचन रूप बनाएँ जाते हैं; जैसे – शिक्षक वृंद, छात्रगण, सेवादल, भक्तजन, जनसमूह, बच्चे लोग, अधिकारिवर्ग ।

# अभ्यास

1. वचन किसे कहते हैं ? हिन्दी में कितने वचन हैं ?
2. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए :

   लड़का, बहू, संतरा, रात, कक्षा, माली, भिखारी, माला, मेला, जाति
3. एकवचन तथा बहुवचन में समान रूप रहने वाले पाँच शब्द लिखिए ।
4. नित्य बहुवचन में रहने वाले पाँचे शब्द लिखिए ।
5. **निम्नलिखित वाक्यों के वचन बदलिए :**

   (i) वह फल तोड़ता है ।

   (ii) मोहन केला खाएगा ।

   (iii) मैदान में गायें चरती हैं ।

   (iv) बच्चे को मिठाई दो ।

   (v) लड़की का भाई आ रहा है ।
6. **कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :**

   (i) तुम ———— के छिलके उतारो । (केला, केले)

   (ii) यहाँ पाँच ———— खड़े हैं । (लड़का, लड़के)

   (iii) सभी ———— को बुलाओ । (बहूयों, बहुओं)

   (iv) अभी समाचार प्रसारित ———— । (हुआ, हुए)

   (v) बच्चे को दो ———— दो । (गुड़िया, गुड़ियाँ)

●

# कारक - विभक्ति (परसर्ग)

**हम जानते हैं :**

एक वाक्य में क्रिया-पद के साथ दूसरे पदों का सीधा संबंध होता है । इसके अलावा पदों का पारस्परिक संबंध भी होता है । यह संबंध 'कारक' कहलाता है । इस संबंध को जानने के लिए जिन कारक चिह्नों का प्रयोग होता है, उन्हें हिन्दी में विभक्ति या परसर्ग कहा जाता है ।

**हम यह भी जानते हैं :**

हिन्दी में निम्नलिखित कारक और उनके परसर्ग होते हैं :

| | कारक | परसर्ग |
|---|---|---|
| 1. | कर्ता (क्रिया को करने या कराने वाला) | $\phi$ (शून्य परसर्ग), ने, से |
| 2. | कर्म (जिस पर क्रिया का फल पड़ता है) | $\phi$ (शून्य परसर्ग), को |
| 3. | करण (क्रिया होने का साधन) | से, के द्वारा |
| 4. | संप्रदान (जिसके हित में क्रिया का संपादन किया जाए) | को, के लिए |
| 5. | अपादान (क्रिया का जिससे अलग होने का भाव हो) | से |
| 6. | संबंध (संज्ञाओं के बीच संपर्क) | का, के, की, रा, रे, री, ना, ने नी |
| 7. | अधिकरण (क्रिया के होने का स्थान या समय) | में, पर |
| 8. | संबोधन (किसी को पुकारने के लिए प्रयुक्त होता है) | हे, अरे आदि |

इनके अलावा कुछ परसर्गीय शब्दावलियों का प्रयोग होता है । जैसे – के कारण, से पहले, के सामने, की ओर, की खातिर, के लगभग आदि ।

## परसर्गों के प्रयोग

**'ने' परसर्ग** : ध्यान दें कि 'ने' परसर्ग केवल कर्ता कारक में आता है । लेकिन कुछ खास अवसरों पर इसका प्रयोग होता है ।

### कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग कहाँ-कहाँ नहीं होता

1. जब क्रिया वर्तमान काल और भविष्यत् काल में होती है तो 'ने' नहीं आता । जैसे –

   गोपाल खेलता है ।

   मीना गीत गाएगी ।

2. जब क्रिया अकर्मक होती है, तो भूत काल में भी 'ने' नहीं आता । जैसे –

   वह आदमी गया ।

   लता हँसी ।

3. संयुक्त क्रिया की सहायक क्रिया अकर्मक होने पर 'ने' का प्रयोग नहीं होगा । जैसे –

   वह खा चुका है ।

   रानी पढ़ नहीं सकी ।

4. क्रिया सकर्मक होने पर भी (i) अपूर्ण भूत, (ii) तात्कालिक भूत और (iii) हेतुहेतु भद् भूत (प्रथम रूप) काल के वाक्यों में 'ने' नहीं आएगा ।

   जैसे – (i) हिमांशु गीत गाता था ।

   सुजाता कहानी लिखती थी ।

   (ii) किसान हल चला रहा था ।

   बहू रोटी बना रही थी ।

   (iii) वह पुस्तक देता मैं ले लेता ।

   गीता पढ़ती तो रीता लिखती ।

## ‘ने’ का प्रयोग कब होता है

जब क्रिया ***सकर्मक*** हो और ***भूतकाल*** में हो तब कर्ता पद के साथ ‘ने’ परसर्ग निम्न स्थितियों में लगता है । जैसे –

(i) सामान्य भूत - गोपाल ने केला खाया । माधवी ने केला खाया ।

रमेश ने रोटी खाई । सुमित्रा ने रोटी खाई ।

(ii) आसन्न भूत - माला ने केला खाया है ।

रमेश ने जलेबी खाई है ।

(iii) पूर्ण भूत - बालकों ने पुस्तक पढ़ी थी ।

सुनीता ने रसगुल्ला खाया था ।

(iv) संदिग्ध भूत - सुरेश ने मेला देखा होगा ।

लड़कियों ने खेल देखा होगा ।

(v) सामान्य भूत - सरोज ने पत्र पढ़ा हो ।

सरोज ने चिट्ठी लिखी हो ।

(vi) हेतुहेतुभद् भूत - तुमने पढ़ा होता तो मैंने भी पढ़ा होता ।

राम ने यह सुना होता तो (उसने) वैसा काम न किया होता ।

**यहाँ ध्यान दें :** जब क्रिया अपूर्ण भूत, तात्कालिक भूत और हेतुहेतुभद् भूत (प्रथम रूप) में हो, तो कर्ता के साथ ***‘ने’ नहीं आता ।***

**अब निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से देखिए :**

| | | |
|---|---|---|
| लड़के ने<br>लड़कों ने<br>लड़की ने<br>लड़कियों ने | एक केला | खाया । |
| लड़के ने<br>लड़कों ने<br>लड़की ने<br>लड़कियों ने | चार केले | खाए । |
| लड़के ने<br>लड़कों ने<br>लड़की ने<br>लड़कियों ने | एक रोटी | खाई । |
| लड़के ने<br>लड़कों ने<br>लड़की ने<br>लड़कियों ने | चार रोटियाँ | खाईं । |

**ध्यान दें** : साधारण नियम यह है कि कर्ता के रूप के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है । लेकिन ऊपर के वाक्यों में कर्ता के बाद 'ने' आया है, इसलिए कर्ता का कोई प्रभाव क्रिया पर नहीं पड़ता । अर्थात् क्रिया कर्ता के लिंग, वचन का अनुसरण नहीं करती; बल्कि कर्म के लिंग, वचन का अनुसरण करती है । पुंलिंग और स्त्रीलिंग तथा एकवचन और बहुवचन के अनुसार कर्म के चार भेद होते हैं । जैसे केला-केले, मछली-मछलियाँ । अत: उन्हीं के अनुसार क्रियाएँ चार प्रकार की हुईं – खाया, खाए, खाई, खाईं ।

अब इन वाक्यों को देखिए –

| | |
|---|---|
| लड़के ने<br>लड़कों ने<br>लड़की ने<br>लड़कियों ने | खाया । |

ऊपर के वाक्यों में भी कर्ता के बाद 'ने' आया है । परंतु इन वाक्यों में 'कर्म' का प्रयोग नहीं हुआ है । इसलिए क्रिया अन्यपुरुष(तृतीय पुरुष) एकवचन पुंलिंग में आई है । कर्ता पुरुष हो या स्त्री, एकवचन में हो या बहुवचन में, कोई फर्क नहीं पड़ा है ।

निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :

| | | |
|---|---|---|
| माँ ने | बच्चों को | बुलाया । |
| बूढ़ी ने | लड़कियों को | देखा । |
| तुमने | लड़के को | खिलाया । |
| लड़के ने | लड़की को | हँसाया । |
| मदन ने | लड़की को | पढ़ाया । |

ऊपर के वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' और कर्म के साथ 'को' आया है । इस स्थिति में क्रिया न तो कर्ता का अनुसरण करती है और न कर्म का । अत: क्रिया अन्य पुरुष एकवचन पुंलिंग में आई है ।

## 'को' का प्रयोग

को परसर्ग कर्ता, कर्म, संप्रदान और अधिकरण कारकों में आता है ।

**कर्ता पद के बाद 'को'**

- नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

मुझे जाना है । सुप्रभा को आना पड़ा ।
तुम्हें तैरना चाहिए । हमें दौड़ना पड़ सकता है ।
उसे पढ़ना पड़ा । आपको लिखना पड़ेगा ।
मुझे केला खाना है । तुम्हें केले खरीदने हैं ।
गोपाल को रोटियाँ खानी चाहिए ।

ऊपर के वाक्यों में कर्ता के साथ 'को' परसर्ग आया है । जिन वाक्यों में मुझे, तुम्हें, हमें, उसे का प्रयोग हुआ है, वहाँ भी अर्थ की दृष्टि से 'को' लगा है (मुझको, तुमको, हमको, उसको) । इन वाक्यों में मुख्य क्रियाएँ 'ना' प्रत्ययांत हैं । उससे कर्ता की बाध्यता, औचित्य और आवश्यकता का बोध होता है ।

- निम्न वाक्यों में कर्ता शारीरिक भाव (बुखार, प्यास) और मानसिक भाव (गुस्सा) के भोक्ता के रूप में तथा हिन्दी आना, याद होना आदि के ज्ञाता के रूप में आए हैं । इन कर्ताओं के साथ 'को' परसर्ग आया है ।

  बच्चे को बुखार है ।

  बच्ची को प्यास लगी ।

  पिताजी को गुस्सा आया ।

  मुझे हिन्दी आती है ।

  तुम्हें यह याद है ?

**कर्मकारक में 'को'**

- वाक्य में कर्म के साथ 'को' का प्रयोग होता है ।

  प्राणिवाचक कर्म के साथ को अवश्य आता है, जैसे –

  माँ ने बच्चे को दूध पिलाया ।

  शिक्षक ने छात्रों को पढ़ाया ।

  किसान ने बैलों को खिलाया ।

  राम गोपाल को देखता है ।

- अप्राणिवाचक कर्म में इस, उस आदि निर्देशकों द्वारा अधिक बल दिए जाने पर 'को' आता है, जैसे–

  मुखिया ने इस तालाब को खुदवाया है ।

**कर्मकारक में 'को' कहाँ नहीं आता**

- अप्राणिवाचक कर्म के साथ 'को' नहीं आता, जैसे –

  शिक्षक ने इतिहास पढ़ाया ।

  लड़के ने किताब पढ़ी ।

  मैंने एक कलम खरीदी ।

**सम्प्रदान कारक में 'को'**

- जिसे कुछ दिया जाता है, उसके साथ 'को' लगता है, जैसे –

  तुम गरीब को अन्न दो ।

  मैंने भिखारी को कम्बल दिया ।

- 'के लिए' के अर्थ में 'को' आता है, जैसे –

  हमारे पास खाने को क्या बचा है ?

  अब हम नहाने को कहाँ जाएँगे ?

  मेरे पास खाने को रोटी भी नहीं है ।

- नमस्कार, सलामी, आदर, धन्यवाद, शुभकामना, आशीर्वाद, बधाई, प्यार, श्रद्धांजलि आदि शब्दों के योग से 'को' आता है ।

  जैसे – गुरुजी को नमस्कार ।

  बच्चों को बहुत-बहुत प्यार ।

  जन्मदिवस पर आपको शुभकामनाएँ ।

  सहायता के लिए आपको अशेष धन्यवाद ।

**अधिकरण कारक में 'को'**

- कालवाचक शब्दों के साथ 'को' आता है, जैसे –

  तुम इतवार को हमारे घर पर आओ ।

  नवम्बर १४ तारीख को बालदिवस मनाया जाता है ।

  मैं दोपहर को अवश्य पहुँच जाऊँगा ।

- दिशासूचक शब्दों के साथ 'को' आता है, जैसे –

  थोड़ा आगे जाकर फिर बाएँ को मुड़ जाना ।

  जरा ऊपर को देखो, मैं यहाँ बैठा हूँ ।

  देखो, सूरज पश्चिम को जा रहा है ।

## ‘के लिए’ का प्रयोग

**सम्प्रदान कारक में ‘के लिए’**

- प्रयोजन या उद्देश्य के अर्थ में, जैसे –

पिताजी ने बहू के लिए एक अँगूठी खरीदी ।

मैं अपने लिए जूते खरीदूँगा ।

मोहन पढ़ने (के लिए) शहर जाता है ।

## ‘से’ का प्रयोग

‘से’ परसर्ग प्राय: करण और अपादान कारकों में होता है । लेकिन कर्ता, कर्म और अधिकरण में भी इसका प्रयोग होता है ।

**कर्ताकारक में ‘से’**

भाववाच्य और कर्मवाच्य के **कर्ता के साथ** ‘से’ का प्रयोग होता है, जैसे –

(i) भाववाच्य - मुझसे चला नहीं जाता ।

रोगी से उठा भी नहीं जाता ।

कड़ी धूप में बच्चे से दौड़ा नहीं जाता ।

तुमसे क्या हँसा नहीं जाता ?

(ii) कर्मवाच्य - मिठाई हलवाई से बनाई गई है ।

मुझसे चाभी खो गयी है ।

बुढ़िया से चने नहीं चबाए जा सकते ।

बच्ची से इतना दूध नहीं पिया जाएगा ।

(iii) प्रेरणार्थक वाक्यों में प्रेरित कर्ता के साथ ‘से’ का प्रयोग होता है, जैसे –

**प्रथम प्रेरणार्थक वाक्यों में**

वह अपना काम नौकरों से कराता है ।

सुरमा अपनी चिट्ठी लीना से लिखाती है ।

**द्वितीय प्रेरणार्थक वाक्यों में**

यह पत्र मोहन से भिजवाया जाएगा ।

माँ आया से बच्ची को दूध पिलवाती है ।

मालिक ने मजदूरों से काम करवाया ।

**कर्मकारक में ‘से’**

कहना, बोलना, पूछना, मिलना, बात करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना आदि क्रियाओं के प्राणिवाचक कर्म के साथ ‘से’ का प्रयोग होता है, जैसे –

तुम इस मामले में निदेशक से मिलो ।
मुझसे क्या कहना चाहते हो ?
छात्र ने शिक्षक से दो प्रश्न पूछे ।
आपसे मेरी यही प्रार्थना है ।

**करणकारक में ‘से’**

(i) साधनवाचक शब्द के साथ, जैसे –

मैं चाकू से आम काटता हूँ ।
हरीश ने तूलिका से तस्वीर बनाई ।
डाकिया साइकिल से आया ।

(ii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण के साथ, जैसे –

तुमने भाषण ध्यान से सुना ?
उमानाथ कठिनाई से पास हो गया ।
मैंने धैर्य से समस्या का मुकाबला किया ।
चूहा तेजी से भागा ।

(iii) कारणवाचक शब्द के साथ, जैसे –

सोनू बुखार से पीड़ित है ।
पौधा धूप से सूख गया ।
मरीज पीड़ा से तड़प रहा है ।

**अपादान कारक में ‘से’**

(i) अलगाव के अर्थ में – पेड़ से पत्ते गिरे ।
बन्दूक से गोली चली ।
हिमालय से गंगा निकली है ।
आग से दूर रहिए ।

(ii) डर के अर्थ में – बच्चा साँप से डरता है ।

(iii) तुलना के अर्थ में – विनोद माधव से लम्बा है ।

(iv) दूरी के अर्थ में – कटक से भुवनेश्वर तीस किलोमीटर दूर है ।

(v) कालावधि के अर्थ में – वह कल से बीमार है ।

(vi) उत्पत्ति के अर्थ में – दूध से दही बनता है ।

(vii) रक्षा करने के अर्थ में – पुलिस नागरिकों को बदमाशों से बचाती है ।

## 'का' का प्रयोग

### (का/के/की, रा/रे/री/, ना/ने/नी)

सम्बंधकारक में 'का' परसर्ग का प्रयोग होता है । यह विकारी-परसर्ग है । अर्थात् लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार इसमें परिवर्तन होता है ।

जैसे – **का** (पुंलिंग एकवचन), **के** (पुंलिंग बहुवचन), **की** (स्त्रीलिंग एकवचन/बहुवचन)

**यहाँ विशेष रूप से ध्यान देना जरूरी है कि 'का' 'की' 'के' का प्रयोग उसके बाद आने वाले संज्ञा-शब्द के लिंग और वचन के अनुसार होता है ।**

(i) लिंग - वचन के अनुसार अन्यपुरुष और संज्ञा में – का, की, के

जैसे - उसका **भाई** उसकी **बहन** उसके **बच्चे**
गोपाल का **घर** गोपाल की **गाय** गोपाल के **गाँववाले**
उनका **घोड़ा** उनकी **बकरी** उनके **कपड़े**
बच्चों का **खेल** बच्चों की **नानी** बच्चों के **खिलौने**

(ii) लिंग - वचन के अनुसार उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में – रा, री, रे

जैसे - मेरा **मस्तक** मेरी **कमर** मेरे **हाथ**
हमारा **मकान** हमारी **गोशाला** हमारे **खेत**
तेरा **हार** तेरी **कलम** तेरे **गहने**
तुम्हारा **लड़का** तुम्हारी **बेटी** तुम्हारे **छात्र**

(iii) लिंग - वचन के अनुसार निजवाचक सर्वनाम में – ना, नी, ने

जैसे - अपना **घर** अपनी **लाठी** अपने **वैल**

## ‘के’ का परिवर्त्तित रूप

एकवचन पुंलिंग शब्द के बाद परसर्ग आने से **‘का’** का **‘के’** हो जाता हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| जैसे - | उसका घर | - | उसके घर में |
| | उनका बच्चा | - | उनके बच्चे के लिए |
| | अनू का बेटा | - | अनु के बेटे को |
| | अपना हाथ | - | अपने हाथ से |
| | अपना घर | - | अपने घर पर |
| | तेरा नाम | - | तेरे नाम में |

**‘के’** - एकवचन में आनेवाले सम्मानजनक व्यक्तियों के लिए –

| | | |
|---|---|---|
| जैसे - | उसके पिताजी | अपने भाई साहब |
| | आपके गुरुजी | हमारे देवता |
| | मेरे मामा | हरि के चाचाजी |

## ‘में’ का प्रयोग

अधिकरण कारक में निम्नलिखित अर्थों में ‘में’ का प्रयोग होता हैं –

(1) स्थान और भीतर का बोध करने के लिए, जैसे –

कमरे में मेज है।
मेरे मामा गाँव में रहते हैं।
वह नवीं कक्षा में पढ़ता है।
कटक में बालियात्रा का मेला लगता है।

(2) समय की अवधि बताने के लिए, जैसे –

पिताजी दो दिन में गाँव आ जाएँगे।
मई के महीने में कड़ी धूप होती है।
एक साल में छह ऋतुएँ होती हैं।
१९४७ ई. में भारत स्वतंत्र हुआ।

(3) तुलनात्मक विशेषता बताने के लिए, जैसे –

आदमी - आदमी में अंतर होता है।
दिनेश और विनोद में बहुत अन्तर है।

फूलों में गुलाब सुन्दर होता है ।

उन फूलों की तुलना में इन फूलों में अधिक सुगन्धि है ।

(4) मूल्य बतलाने के लिए, जैसे –

तुमने कलम कितने में खरीदी ?

मैंने यह रजिस्टर पचास रुपये में खरीदा ।

अब आलू प्रति किलो दस रुपये में मिलता है ।

## ‘पर’ का प्रयोग

अधिकरण कारक में निम्नलिखित अर्थों में ‘पर’ का प्रयोग होता है –

(1) ऊपर की स्थिति बतलाने के लिए –

पेड़ पर बंदर बैठा है ।

मेज पर किताब है ।

(2) दूरी बतलाने के लिए –

कुछ दूरी पर एक तालाब है ।

नदी थोड़ी दूरी पर है ।

(3) ठीक समय की सूचना देने के लिए –

दो बजकर तीस मिनट पर गाड़ी आएगी ।

सही समय पर काम शुरू करो ।

(4) क्रियार्थक संज्ञा के बाद ‘के बाद’ के अर्थ में –

समय होने पर नाटक शुरू होगा ।

आपके वहाँ जाने पर सब खुश हुए ।

मेरे कहने पर वह मान गया ।

(5) किसी के प्रति या किसी के विषय में प्रतिक्रिया प्रकट करते समय –

मुझ पर भरोसा रखो ।

इस मुद्दे पर आज चर्चा होगी ।

जीवों पर दया करो ।

# अभ्यास

**1. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मोहन | | पत्र | लिखा । |
| माधवी | | एक फल | खाया । |
| बूढ़े | | एक गड्ढा | खोदा । |
| हम | ने | दो पत्र | लिखे । |
| उमेश | | दो फल | खाए । |
| तुम | | दो गड्ढे | खोदे । |
| दुकानदार | | किताब | बेची । |
| लड़के | | कलम | खरीदी । |
| आप | | चिट्ठी | भेजी । |
| सुरेश | | किताबों | बेचीं । |
| महेश | | कलमें | खरीदीं । |
| शशि | | चिट्ठियाँ | भेजीं । |

**2. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

| | |
|---|---|
| लड़का | गया । |
| लड़की | गई । |
| बच्चे | दौड़े । |
| चोर | भागा । |

**3. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रमोद | | खाया । |
| विनोद | | पढ़ा । |
| संगीता | ने | लिखा । |
| तुम | | देखा । |

**4. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :**

उदाहरण – वह चित्र बनाता है ।

उसने चित्र बनाया ।

(i) लीला पाठ पढ़ती है ।

(ii) गोपाल नाटक देखता है ।

(iii) लड़के क्रिकेट खेलते हैं ।

(iv) शिशु दूध पीता है ।

(v) वह दरवाजा धकेलता है ।

**5. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

(क)

| कर्ता | परसर्ग | कर्मपूरक | क्रिया |
|---|---|---|---|
| आप | | बुखार | आई है । |
| वसंत | को | गुस्सा | आया । |
| वर्षा | | भूख | लगी । |

(ख)

| कर्ता | कर्म | परसर्ग | क्रिया |
|---|---|---|---|
| शीला | बहन | | बुला रही है । |
| माँ ने | मोहन | को | बुलाया । |
| उसने | बेटी | | उठा लिया । |
| माँ | बच्ची | | सुलाती है । |

(ग)

| कर्ता | संप्रदान | परसर्ग | कर्म | क्रिया |
|---|---|---|---|---|
| राजा | गरीबों | | वस्त्र | देंगे । |
| सेठ ने | भिखारी | | पैसे | दिए । |
| उसने | गुरुजी | को | प्रणाम | किया । |
| अतिथि ने | बच्चों | | आशीर्वाद | दिया । |

**6. नीचे कुछ कारक दिए गए हैं । उनके रेखांकित शब्दों के कारक बताइए :**

(i) मुझे सर्दी लग गई ।

(ii) प्रधान अध्यापक ने छात्रों को उपदेश दिया ।

(iii) शहीदों को सलामी दी गई ।

(iv) मैं रात को दूध पीकर सोता हूँ ।

(v) मुझे कटक जाना पड़ा ।

**7. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए –**

(क)

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुझ | | बासी भात | खाया नहीं जाता । |
| गोपाल | से | खट्टी चीज | खाई नहीं जाती । |
| रोगी | | इतनी दूर | चला नहीं जाता |
| मुझ | | देर रात तक | बैठा नहीं जाता |

(ख)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मैं | | मजदूरों | | एक पेड़ | कटवाया । |
| तुम | | नौकर | | दो पेड़ | कटवाए । |
| इंजीनियर | ने | लोगों | से | बाँध | बनवाया । |
| हम | | दर्जी | | कमीजें | सिलवाईं । |
| माँ | | आया | | काम | करवाया |

(ग)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राजा | | पण्डित | | एक प्रश्न | पूछा । |
| तुम | ने | मुझ | से | कुछ | कहोगे ? |
| हम | | आप | | एक | अनुरोध किया । |
| छात्र | | प्रधान अध्यापक | | यही | प्रार्थना की । |

(घ)

| | | | |
|---|---|---|---|
| शशि | साइकिल | | आई |
| राजू | कल | से | लिखता है । |
| तुम | बुखार | | पीड़ित हो । |
| वह | तेजी | | भागा । |

| | | | |
|---|---|---|---|
| (ङ) पेड़ | से | पत्ता | गिरा |
| बाँध | | नहर | निकली है । |
| आग | | दूर | रहो । |
| साँप | | तुम | डरते हो । |
| फल | | परीक्षा | शुरू होगी । |

**8. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

(क)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यह | आप<br>गोपाल<br>विमल<br>मीरा | का | भवन<br>कमरा<br>भाई<br>पंखा | है । |

(ख)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ये | चमेली<br>मकान<br>आप<br>उस | के | मोजे<br>दरवाजे<br>पंखे<br>पपीते | हैं । |

(ग)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह | आप<br>दिनेश<br>महेश<br>विनीता | की | कार<br>कुर्सी<br>कॉपी<br>कलम | है |

(घ)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वे | उस<br>उन<br>रवि<br>रानी | की | किताबें<br>कुर्सियाँ<br>कॉपियाँ<br>मालाएँ | हैं । |

**9. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

(क)

| | | | |
|---|---|---|---|
| किताब<br>पानी<br>कलम<br>वर्तन | आलमारी<br>गिलास<br>जेब<br>बक्से | में | है । |

(ख)

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुसुम<br>मनोज<br>बंदर<br>किताब | छत<br>घर<br>पेड़<br>मेज | पर | है । |

**10. सही परसर्ग लगाकर खाली स्थान भरिए :**

(i) मेज कमरे ________ है ।

(ii) जीवों ________ दया करो ।

(iii) उस ________ भाई आ रहा है ।

(iv) लीला उस ________ बहन है ।

(v) मैंने आप ________ दूर से देखा ।

(vi) मैं ________ रोटी खा ली है ।

(vii) माँ ________ शिशु को दूध पिलाया ।

(viii) पेड़ ________ फल गिरा ।

(ix) साँप नेवले ________ डरता है ।

(x) रोगी हैजे ________ मर गया ।

●

# सर्वनाम

संज्ञा के बदले आनेवाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं । सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं । वे है–

- पुरुषवाचक
  - उत्तम (मैं, हम)
  - मध्यम (तू, तुम, आप)
  - अन्य (वह,यह,वे,ये)
- निजवाचक (आप)
- निश्चयवाचक (वह, यह, वे, ये)
- अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ)
- प्रश्नवाचक (कौन, क्या)
- संबंधवाचक (जो, वह)

**आइए, इनके प्रयोग देखें :**

(१) मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ । (उत्तम पुरुष, एकवचन)

हम सब भारतीय हैं । (उत्तम पुरुष, बहुवचन)

तू सच बोलती है । (मध्यमपुरुष, एकवचन)

तुम कहाँ रहते हो ? (मध्यमपुरुष, एकवचन)

तुम लोग यहीं बैठो । (मध्यमपुरुष, बहुवचन)

आप कृपया पधारिए । (मध्यमपुरुष, एकवचन)

आप लोग बहुत दयालु हैं । (मध्यमपुरुष, बहुवचन)

वह / यह आ रहा है । (अन्यपुरुष, एकवचन)

वे / ये पढ़ रहे हैं । (अन्यपुरुष, बहुवचन)

(२) मैं यह काम आप / खुद / स्वयं कर लूँगा । (निजवाचक)

तू पूरा काम अपने आप कर पाएगा । (निजवाचक)

यह मुझसे नहीं, अपने आप से पूछो । (निजवाचक)

वे आप ही आप चले गये । (निजवाचक)

यह हमारा आपस का मामला है । (निजवाचक)

(३) यह एक कलम है । (निश्चयवाचक, निकटवर्ती)

ये / वे मेरी पुस्तकें हैं । (निश्चयवाचक, दूरवर्ती)

(४) कोई / कोई-न-कोई दौड़ रहा है । (अनिश्चयवाचक, एकवचन, व्यक्ति)

सब कोई / कोई-कोई ऐसा कहते हैं । (अनिश्चयवाचक, बहुवचन, व्यक्ति)

तुमने कुछ / कुछ-न-कुछ तो खा लिया ? (अनिश्चयवाचक, एकवचन, वस्तु)

(५) कौन वहाँ सो रहा है ? (प्रश्नवाचक, एकवचन, व्यक्ति)

कौन-कौन खा चुके हैं ? (प्रश्नवाचक, बहुवचन, व्यक्ति)

उन मिठाइयों में से तुम्हें कौन-कौन-सी पसंद हैं ? (प्रश्नवाचक, बहुवचन, वस्तु)

तुम क्या चाहते हो ? (प्रश्नवाचक, एकवचन में प्रयोग)

(६) जो कमाएगा, वह खाएगा । (संबंधवाचक, एकवचन)

जो करेगा सो भरेगा । (संबंधवाचक, एकवचन)

जो-जो यहाँ आए, वे सब खाना खाकर गए । (संबंधवाचक, बहुवचन)

## सर्वनामें की रूपावली

### वर्ग - १

| कारक | उत्तमपुरुष एकवचन | उत्तमपुरुष बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | मैं / मैंने | हम / हमने |
| कर्म | मुझे / मुझको | हमें / हमको |
| करण | मुझसे | हमसे |
| संप्रदान | मुझे / मुझको / मेरे लिए | हमें / हमको / हमारे लिए |
| अपादान | मुझसे | हमसे |
| संबंध | मेरा / मेरे / मेरी | हमारा / हमारे / हमारी |
| अधिकरण | मुझमें / मुझ पर | हम में / हम पर |

तू (मध्यमपुरुष, एकवचन) का रूप 'मैं' की तरह होगा ।

तुम (मध्यमपुरुष, बहुवचन) का रूप 'हम' की तरह होगा ।

### वर्ग - २

| कारक | अन्यपुरुष एकवचन | अन्यपुरुष बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | वह / उसने | वे / उन्होंने |
| कर्म | उसे / उसको | उन्हें / उनको |
| करण | उससे | उनसे |
| संप्रदान | उसे / उसको / उसके लिए | उन्हें / उनको / उनके लिए |
| उपादान | उससे | उनसे |
| संबंध | उसका / उसके / उसकी | उनका / उनके / उनकी |
| अधिकरण | उसमें / उस पर | उनमें / उन पर |

(यह, ये, कौन, क्या, जो, सो के रूप इस प्रकार होंगे ।

**वर्ग - ३**

**अनिश्चयवाचक सर्वनाम**

| वचन | मूल रूप | तिर्यक रूप |
|---|---|---|
| एकवचन | कोई | किसी ने / को / से / के लिए / का / के / की / में / पर |
| बहुवचन | कोई | किन्हीं ने / को / से / के लिए / का / के/ की /में / पर |

**वर्ग - ४**

'कुछ' और 'आप' के मूल रूप और तिर्यक रूप समान-समान रहते हैं ।

# अभ्यास

1. सर्वनाम किसे कहते है ? उसके भेदों के नाम लिखिए ।
2. पुरुषवाचक सर्वनाम कौन-कौन से हैं, लिखिए ।
3. 'वह' का सभी कारकों में रूप लिखिए ।
4. 'कोई' का बहुवचन में सभी कारकों के रूप लिखिए ।
5. **निम्नलिखित सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

   तू, तुझे, उन्हें, आपका, जिसकी, मेरी, कोई, कुछ, हमसे, किसको, किनका, वे, कौन-कौन, जो, खुद, क्या, जिन्हें, जिस पर, आप, अपने आप, तुम्हारे, यह ।

6. **निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनामें को छाँटकर लिखिए कि वे किस-किस प्रकार के सर्वनाम हैं :**

   (i) तुम वहाँ आप ही चले जाओ ।

   (ii) हम क्या चाहते हैं, यह तो आप खुद ही जानते हैं ।

   (iii) जिनको लड्डू मिल गए, वे चले जाएँ ।

   (iv) वह किसीसे कोई बात नहीं करता है ।

(v) क्या किसने उस पर गुस्सा किया है ?

(vi) वह मेरा भाई है, तुम कौन हो ?

(vii) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

**7. निम्नलिखित सर्वनामें को परसगों से जोड़िए :**

मैं + को, वह + ने, जो + पर, जो (बहुवचन) + ने, तू + को, कोई + की, कोई (बहुवचन) + ने, वे + से, ये + ने, आप + की ।

**8. वाक्यों के खाली स्थानों को कोष्ठकों के सर्वनामों के उचित रूप से भरिए :**

(i) ——— जाने दो । (वह)

(ii) ——— नाम क्या है ? (तू)

(iii) ——— नाम लीला है । (मैं)

(iv) तुम ——— तो खा लो । (कुछ)

(v) तुम ——— बुला रहे थे ? (कौन)

(vi) ——— किताब पढ़ ली ? (वे)

(vii) ——— पर मेरा विश्वास है । (वह)

(viii) ——— यह बात मालूम थी । (इस)

(ix) ——— पर मेरा संदेह नहीं है । (केई)

(x) ——— चाय में ज्यादा चीनी है ? (क्या)

**9. 'क' स्तंभ के मूल रूपों के साथ 'ख' स्तंभ के परसर्ग सहित रूपों को जोडिए :**

| **'क' स्तंभ** | **'ख' स्तंभ** |
|---|---|
| हम | तुम्हारा |
| तुम | किन्हींने |
| आप | इन्हें |
| कौन | आप पर |
| यह | हमें |
| कोई | किन्होंने |

# विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं । इसके चार भेद होते हैं –

(1) गुणवाचक (2) संख्यावाचक (3) परिमाणवाचक (4) सार्वनामिक

(1) **गुणवाचक विशेषण** : ये संज्ञा के गुण आदि का बोध कराते हैं–

**गुण –** अच्छा, अशांत, उचित, कुरूप, खट्टा, चतुर, झूठा, दुष्ट, दयालु, नेक, बुरा, भला, मधुर, मजबूत, मीठा, मूर्ख, सच्चा, सीधा, सुन्दर ।

**रंग –** काला, गुलाबी, चमकीला, नारंगी, बैंगनी, पीला, हरा ।

**आकार –** गोल, चौड़ा, छोटा, टेढ़ा, तिकोना, नाटा, नुकीला, पोला, बड़ा, मोटा, लम्बा, सुडौल, सीधा, सँकरा ।

**दशा –** गरीब, गाढ़ा, गीला, घना, दुबला, दु:खी, धनवान, पतला, पिघला, बीमार, बूढ़ा, मजबूत, रोगी, लंगड़ा, सुखी, सूखा ।

**काल –** अगला, अर्वाचीन, आधुनिक, आगामी, ताजा, नया, पिछला, पुराना, बासी, भूत, भावी, वर्तमान, विगत ।

**दिशा –** उत्तरी, ऊपरी, दक्षिणी, पश्चिमी, पूर्वी, पुरवाई, सामनेवाला ।

**स्थान –** अमेरिकी, कश्मीरी, ग्रामीण, जापानी, दूरवर्ती, देशी, पड़ोसी, पहाड़ी, बाहरी, भारतीय, भीतरी, विदेशी, शहरी ।

(2) **संख्यावाचक विशेषण** : ये गणतीय संज्ञा की संख्या बताते हैं । संख्या निश्चित या अनिश्चित हो सकती है । ये दो प्रकार के होते हैं – (क) निश्चित संख्यावाचक (ख) अनिश्चित संख्यावाचक ।

(क) **निश्चित संख्यावाचक : जैसे –** पाँच छात्र, सौ आदमी, आधा पानी, दो दो लड्डू, दो तिहाई फसल, सवा सेर गेहूँ, चौगुने लोग, साढ़े तीन सौ रुपये, दो सही एक बटा चार गुना दाम, इक्कीसवीं सदी, पहला सोपान, तीसरी दुनिया, नवीं कक्षा, पाँचों औरतें, हरेक आदमी, प्रत्येक लड़का ।

(ख) **अनिश्चित संख्यावाचक : जैसे –** काफी लोग, बहुत मसाला, सब मकान, सैकड़ों लोग, कम चीनी, थोड़ा चावल, तीन-चार आदमी, पर्याप्त दूध, काफी सामान, कई पुस्तकें ।

(3) **परिमाणवाचक विशेषण :** ये अगणनीय संज्ञा का परिमाण बताते हैं । परिमाण निश्चित या अनिश्चित हो सकती है । इस दृष्टि से ये दो प्रकार के होते हैं–

(क) **निश्चित परिमाणवाचक :** जैसे– एक लिटर तेल, पाँच किलो चीनी, ढाई मीटर कपड़ा, लोटा भर पानी, दो फुट छड़ी ।

(ख) **अनिश्चित परिमाणवाचक :** जैसे– थोड़ा दूध, अधूरा काम, ज्यादा घी, तनिक-सी चाय, थोड़ी-सी तकलीफ, सारा अनाज ।

(4) **सार्वनामिक विशेषण :** इसमें सर्वनाम संज्ञा के पहले आकर उसकी विशेषता बताता है । जैसे – अपना काम, यह औरत, वह लड़का, कोई किताब, इस बच्ची की, इन लड़कों की, कौन-सी किताब, ऐसा लड़का, वैसा आदमी, ऐसी / वैसी पुस्तक, जैसा नाम, मेरा फोटो ।

# अभ्यास

1. विशेषण किसे कहते हैं ? सोदाहरण उनके भेद बताइए ।
2. पाँच गुणवाचक विशेषणों का उल्लेख करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।
3. **निम्नलिखित विशेषणों में से गुणवाचक और सार्वनामिक विशेषणों को अलग-अलग छाँटिए :**

   सीधा, कितना, गोल, ऐसा, ग्रामीण, बुरा, जैसा, गरीब, कौन, प्राचीन, मैला, अपनी, पहाड़ी, बैंगनी, सुन्दर, अपने, मूर्ख, जितना, तरल ।

**4.** **निम्नलिखित विशेषणों में से संख्यावाचक विशेषणों और परिमाणवाचक विशेषणों को अलग-अलग कीजिए :**

सात, बीसवाँ, दो मीटर, दुगुना, तीनों, चार किलो, जरा-सा, तनिक-सा, सैकड़ों, थोड़ा-सा, पाँच मीटर, कोई दो सौ, दो लिटर, अधूरा ।

**5.** **निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषणों को छाँटिए :**

(क) नाटा लड़का बहुत साहसी है ।

(ख) यह घोड़ा काला है, पर वह घोड़ा लाल है ।

(ग) यहाँ एक कप कॉफी पाँच रुपये में मिलती है ।

(घ) उड़ते हुए पक्षी बहुत सुन्दर लगते हैं ।

(ङ) थोड़ी-सी चाय पी लो, पर अधूरा काम पूरा कर लो ।

**6.** **'क' स्तंभ के विशेषणों के साथ 'ख' स्तंभ के विशेष्यों (संज्ञाओं) को मिलाकर लिखिए :**

| 'क' स्तंभ | 'ख' स्तंभ |
|---|---|
| कीमती | आदमी |
| तीखी | कमीज |
| दुगुनी | फूल |
| पुराने | किताब |
| गरीब | जूते |
| उजली | आवाज |
| सुन्दर | कीमत |

●

# क्रिया

जिस पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे – पढ़ना, जाना, लिखना, दौड़ना आदि।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे – पढ़, जा, लिख, दौड़

**क्रिया के भेद :–**

क्रिया के भेदों में से कुछ प्रमुख भेदों पर यहाँ चर्चा की जा रही हैं।

**1. रचना के आधार पर क्रिया**

रचना के आधार पर क्रिया दो प्रकार की हैं।

(i) **मूल क्रिया** : जैसे – पढ़ना, देखना, दौड़ना आदि

(ii) **यौगिक क्रिया** : जैसे – पढ़ सकना, देख लेना, दौड़ सकना आदि।

संयुक्त क्रिया और प्रेरणार्थक क्रिया इसके प्रमुख भेद हैं।

**2. कर्म के आधार पर क्रिया**

कर्म के आधार पर क्रिया के तीन भेद होते हैं।

(i) सकर्मक (ii) द्विकर्मक (iii) अकर्मक

**सकर्मक क्रिया –** जिस वाक्य में कर्म का आना या उसकी संभावना बनी रहना सुनिश्चित है, उस वाक्य की क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – सुरेश पत्र लिखता है।

इस वाक्य में लिखने वाल 'सुरेश' कर्ता है। लिखा जाने वाला 'पत्र' कर्म है। अत: 'लिखना' क्रिया सकर्मक है। इसी प्रकार पढ़ना, देखना, खाना, पीना, काटना, खोदना, गाना आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं।

**द्विकर्मक क्रिया –** जिस वाक्य में दो कर्म आते हैं, उस वाक्य की क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं ।

जैसे – शिक्षक ने छात्र को इतिहास पढ़ाया । यहाँ दो प्रश्न पूछने पर दो उत्तर मिलते हैं ।

शिक्षक ने किसको पढ़ाया ? – छात्र को ।

शिक्षक ने छात्रको क्या पढ़ाया ? – इतिहास

अर्थात् छात्र को और इतिहास दो कर्म हैं ।

दो कर्म लेने वाली क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं । इसी प्रकार कहना, पूछना, देना, खिलाना आदि द्विकर्मक क्रियाएँ हैं ।

**अकर्मक क्रिया –** अकर्मक क्रिया अपने साथ कर्म नहीं ले सकती । जैसे – बच्चे दौड़ते हैं । इस वाक्य में बच्चे क्या दौड़ते हैं या बच्चे किसको दौड़ते हैं – प्रश्न पूछने पर कोई उत्तर नहीं मिलता ।

इसी प्रकार आना, जाना, भागना, तैरना, कूदना, रोना, हँसना, उठना, बैठना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं ।

**3. क्रिया की पूर्णता-अपूर्णता के आधार पर क्रिया**

क्रिया की पूर्णता या अपूर्णता के आधार पर क्रियाएँ दो प्रकार की हैं –

(i) समापिका क्रिया

(ii) असमापिका क्रिया ।

**समापिका क्रिया** वाक्य के अंत में आती है और वाक्य की समाप्ति की सूचना देती है ।

जैसे – वे शिक्षक हैं । पिताजी दफ्तर गए हैं ।

**असमापिका क्रिया** से वाक्य की समाप्ति का बोध नहीं होता ।

जैसे – मैंने घर लौटकर खाना खाया ।

बच्ची मुझे देखते ही रो पड़ी ।

भाषा बहता नीर है ।

सुनी हुई बात पर विश्वास न करो।

## संयुक्त क्रिया

दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनने वाली क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं । इससे अर्थ में अधिक स्पष्टता आ जाती है । इसकी प्रथम क्रिया को मुख्य क्रिया और बाद में आने वाली क्रिया को सहायक क्रिया कहते हैं । नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

वर्षा थम चुकी है । वह पढ़ नहीं सका । शिशु रोने लगा । हम रोज स्कूल जाया करते हैं । तुम्हें सच बोलना चाहिए । हमें मोमबत्ती जलाकर पढ़ना पड़ा । उसे जाने दो । अचानक चिड़िया बोल उठी । तुम क्या करना चाहते हो ? लड़के खेलते रहे । गिलास गिर पड़ा । तुम क्या कर बैठे ?

## वाच्य

वाक्य में क्रिया की तीन स्थितियाँ होती हैं । क्रिया कभी कर्ता का अनुसरण करती है तो कभी कर्म का, कभी कर्ता या कर्म का अनुसरण न करके स्वतंत्र रहती है । इन स्थितियों को वाच्य कहते हैं । यानी वाच्य क्रिया के उस रूप-परिवर्तन को कहते हैं, जिससे

पता चले कि वाक्य में कर्ता, कर्म या क्रिया (भाव) – इन तीनों में से किसकी प्रधानता है ।

अत: वाच्य तीन प्रकार के होते हैं ।

(i) कर्तृवाच्य, (ii) कर्मवाच्य, (iii) भाववाच्य ।

**कर्तृवाच्य –** कर्तृवाच्य में कर्ता ही वाक्य का उद्देश्य या केन्द्र है । वाक्य में उसकी प्रधानता रहती है ।

जैसे – कमला लिखती है । घोड़ा दौड़ता है । गाड़ी आती है । पंखा चलता है ।

**कर्मवाच्य** – कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता रहती है । कर्म वाच्य केवल सकर्मक क्रिया का होता है ।

जैसे – पुस्तक पढ़ी जाती है ।

कपड़ा सिला जाता है ।

चोर पकड़ा गया ।

मुझसे बासी रोटी नहीं खाई जाएगी ।

कर्म वाच्य में सामान्यत: कर्ता अनुपस्थित रहता है । अगर कर्ता आए तो उसके साथ 'से' या 'द्वारा' का प्रयोग होता है । कर्म सामान्यत: परसर्ग रहित होता है । मुख्य क्रिया के साथ 'जाना' सहायक क्रिया अनिवार्य रूप से आती है ।

**भाववाच्य –** भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है । भाववाच्य के वाक्य में क्रिया अकर्मक होती है । सहायक क्रिया 'जाना' आती है । क्रिया पुंलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में रहती है ।

जैसे – मुझसे चला नहीं जाता । रोगी से उठा नहीं जाता ।

उससे दौड़ा नहीं जाएगा । इस धूप में अब नहीं चला जाता ।

# प्रयोग

प्रयोग का अर्थ है – 'अन्विति' । वाक्य में क्रिया का रूप कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार होता है । कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप बनने से उसे 'कर्तरि प्रयोग' कहते हैं । कर्म के अनुसार क्रिया का रूप बनने से उसे 'कर्मणि प्रयोग' कहते हैं । क्रिया कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर स्वतंत्र (अन्यपुरुष, एकवचन, पुलिंग) होने से उसे 'भावे प्रयोग' कहते हैं ।

जैसे – गोपाल पढ़ता है । (कर्तृवाच्य - कर्तरि प्रयोग)

गोपाल ने पाठ पढ़ा । (कर्तृवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

गोपाल ने कहानी पढ़ी । (कर्तृवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

गोपाल ने पढ़ा । (कर्तृवाच्य - भावे प्रयोग)

गोपाल ने गोविन्द को पढ़ाया । (कर्तृवाच्य - भावे प्रयोग)

कहानी पढ़ी गयी । (कर्मवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

एकांकी पढ़ा गया । (कर्मवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

सड़े आमों को फेंका गया । (कर्मवाच्य - भावे प्रयोग)

मुझसे तैरा नहीं जाता । (भाववाच्य - भावे प्रयोग)

## प्रेरणार्थक क्रिया

जिस क्रिया से यह स्पष्ट होता है कि कर्ता दूसरे की प्रेरणा से कार्य करता है उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं । इसके दो रूप होते हैं – प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया ।

- **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया** : इसमें कर्ता प्रत्यक्ष रूप से भाग लेता है ।

• **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया** : इसमें कर्ता प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेता । उसकी प्रेरणा से कोई दूसरा काम करता है ।

प्रेरणा देनेवाले को प्रेरक कर्ता कहते हैं । प्रेरणा से काम करनेवाले को प्रेरितकर्ता कहते हैं । जैसे –

मालिक नौकर से काम करवाता है ।

(यहाँ मालिक प्रेरक कर्ता है और नौकर प्रेरित कर्ता है ।)

**प्रेरणार्थक क्रियाओं के रूप-परिवर्तन के कुछ नियम :**

(1) मूलधातु में 'आना' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और 'वाना' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती है, जैसे ।

| **मूलधातु** | **प्रथम प्रेरणार्थक** | **द्वितीय प्रेरणार्थक** |
|---|---|---|
| उग | उगाना | उगवाना |
| उड़ | उड़ाना | उड़वाना |
| खिल | खिलाना | खिलवाना |
| गिर | गिराना | गिरवाना |
| चल | चलाना | चलवाना |
| दौड़ | दौड़ाना | दौड़वाना |
| पढ़ | पढ़ाना | पढ़वाना |
| लिख | लिखाना | लिखवाना |
| सुन | सुनाना | सुनवाना |

(2) कुछ मूल धातुओं की प्रथम मात्रा का परिवर्तन करके (आ > अ, ई/ए > इ, ऊ/ओ > उ) और फिर 'आना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है, जैसे –

| **मूलधातु** | **प्रथम प्रेरणार्थक** | **द्वितीय प्रेरणार्थक** |
|---|---|---|
| ओढ़ | उढ़ाना | उढ़वाना |
| काट | कटाना | कटवाना |
| खेल | खिलाना | खिलवाना |
| घूम | घुमाना | घुमवाना |
| घोल | घुलाना | घुलवाना |
| छोड़ | छुड़ाना | छुड़वाना |
| जाग | जगाना | जगवाना |
| जीत | जिताना | जितवाना |
| डूब | डुबाना | डुबवाना |
| नाच | नचाना | नचवाना |
| पीस | पिसाना | पिसवाना |
| बोल | बुलाना | बुलवाना |
| लेट | लिटाना | लिटवाना |

(3) स्वरांत धातुओं की प्रथम मात्रा का परिवर्तन करके (आ/ई/ए > इ, ऊ/ओ > उ) और फिर 'लाना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'लवाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है, जैसे –

| **मूलधातु** | **प्रथम प्रेरणार्थक** | **द्वितीय प्रेरणार्थक** |
|---|---|---|
| खा | खिलाना | खिलवाना |
| छू | छुलाना | छुलवाना |
| जी | जिलाना | जिलवाना |
| दे | दिलाना | दिलवाना |
| धो | धुलाना | धुलवाना |
| नहा | नहलाना | नहलवाना |
| पी | पिलाना | पिलवाना |
| रो | रुलाना | रुलवाना |
| सी | सिलाना | सिलवाना |
| सो | सुलाना | सुलवाना |

(4) कुछ धातुओं के दो-दो रूप बनते हैं, जैसे –

| **मूलधातु** | **प्रथम प्रेरणार्थक** | **द्वितीय प्रेरणार्थक** |
|---|---|---|
| कह | कहाना/कहलाना | कहवाना/कहलवाना |
| देख | दिखाना/दिखलाना | दिखवाना/दिखलवाना |
| बैठ | बिठाना/बिठलाना | बिठवाना/बिठलवाना |
| सीख | सिखाना/सिखलाना | सिखवाना/सिखलवाना |

(5) कुछ क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, जैसे – खेना, खोना, गाना, ढोना, पीटना, भेजना, लेना ।

(6) कुछ क्रियाओं के कोई भी प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, जैसे – आना, गवाँना, गरजना, चाहना, जँचना, जानना, जाना, पाना, पछताना, पुकारना, मिलना, रुचना, सोचना, होना ।

# काल

क्रिया घटित होने के समय को काल कहते हैं । क्रिया हो चुकी है तो वह भूतकाल है । होनी है, तो भविष्यत् काल है और हो रही है तो वर्तमान काल है । अतएव क्रिया के तीन काल हैं ।

(1) भूतकाल, (2) वर्तमान काल, (3) भविष्यत् काल

## भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि क्रिया का व्यापार बीते हुए समय में पूरा हो गया, उसे भूतकाल कहते हैं । इसके छह भेद हैं –

(1) **सामान्य भूत** – इससे बीते हुए समय का तो बोध होता है, पर विशेष समय का ज्ञान नहीं हो पाता । जैसे – लड़का आया । रमेश ने खाया ।

(2) **आसन्न भूत** – इससे पता चलता है कि काम अभी-अभी समाप्त हुआ है ।

जैसे – लड़की आयी है । राधा ने खाया है ।

(3) **पूर्ण भूत** – इससे पता चलता है कि काम बहुत पहले समाप्त हो चुका है ।

जैसे – बच्चा गया था । सुरेश ने लिखा था ।

(4) **अपूर्ण भूत** – इससे पता चलता है कि काम बहुत पहले आरंभ हुआ था, पर उसकी पूर्णता का ज्ञान नहीं हो पाता । जैसे – अरुण लिख रहा था । रवि पढ़ता था ।

(5) **संदिग्ध भूत** – इससे शुरू हो गया काम पूरा हुआ था या नहीं, यह स्पष्ट नहीं हो पाता । जैसे – उसने चिट्ठी लिखी होगी । चोर भागा होगा ।

(6) **हेतुहेतुमद् भूत** – इससे पता चलता है कि शर्त पूरी न होने के कारण शुरू हुआ काम पूरा नहीं हो सका ।

जैसे – वर्षा होती तो फसल अच्छी होती ।

उसने पढ़ा होता तो मैंने लिखा होता ।

## वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से पता चलता है कि क्रिया का व्यापार वर्तमान समय में जारी है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। इसके चार भेद हैं।

(1) **सामान्य वर्तमान** – इससे पता चलता है कि काम का आरंभ बोलने या लिखने के समय हुआ है। जैसे – मैं रोज पढ़ता हूँ। मालती रोती है।

(2) **तात्कालिक वर्तमान** – इससे पता चलता है कि काम वर्तमान समय में हो रहा है। जैसे – कामिनी पढ़ रही है। शिशु खेल रहा है।

(3) **संदिग्ध वर्तमान** – इससे वर्तमान समय में कार्य के होने में संदेह रहता है। जैसे – छात्र अभी पढ़ रहे होंगे। मोहन आता होगा।

(4) **संभाव्य वर्तमान** – इससे कार्य वर्तमान समय में होने की संभावना रहती है। जैसे – माधवी आती हो। छात्र अभी पढ़ रहे हों।

## भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि क्रिया का व्यापार आनेवाले समय में पूरा होगा, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं।

(1) **सामान्य भविष्यत्** – इससे पता चलता है कि आने वाले समय में कार्य संपन्न होगा; जैसे – मैं पाठ पढ़ूँगा। सुलोचना कटक जाएगी।

(2) **संभाव्य भविष्यत्** – इससे पता चलता है कि आने वाले समय में कार्य के होने की संभावना है; जैसे – संभवत मैं कल पुरी जाऊँ।

(3) **हेतुहेतुमद् भविष्यत्** – इससे पता चलता है कि भविष्य में कार्य का होना दूसरे कार्य के होने पर निर्भर करता है; जैसे –

तुम आओ तो मैं जाऊँ।

वह पढ़े तो पास हो जाए।

## कालभेद से वाक्य संरचना
## 'जाना' (अकर्मक क्रिया, पुंलिंग)

■ **भूत काल**

| काल भेद | मैं | तू/वह | तुम | हम/आप/वे |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | गया । | गया । | गये । | गये । |
| आसन्न | गया हूँ । | गया है । | गये हो । | गये हैं । |
| पूर्ण | गया था । | गया था । | गये थे । | गये थे । |
| अपूर्ण | जाता था । | जाता था । | जाते थे । | जाते थे । |
| | जा रहा था । | जा रहा था । | जा रहे थे । | जा रहे थे । |
| संदिग्ध | गया होऊँगा | गया होगा । | गये होगे । | गये होंगे । |
| | गया हूँगा । | | गये होंगे । | |
| हेतुहेतुमद् | जाता । | जाता | जाते । | जाते । |
| | गया होता । | गया होता । | गये होते । | गये होते । |

■ **वर्तमान काल**

| कालभेद | मैं | तू/वह | तुम | हम/आप/वे |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | जाता हूँ । | जाता है । | जाते हो । | जाते हैं । |
| तात्कालिक | जा रहा हूँ । | जा रहा है । | जा रहे हो । | जा रहे हैं । |
| संदिग्ध | जाता होऊँगा | जाता होगा । | जाते होगे/होंगे । | जाते होंगे । |
| | जाता हूँगा । | | | |
| | जा रहा होऊँगा । | जा रहा होगा । | जा रहे होगे/होंगे । | जा रहे होंगे । |
| | जा रहा हूँगा । | | | |
| संभाव्य | जाता होऊँ । | जाता हो । | जाते हो । | जाते हों । |
| | जा रहा होऊँ । | जा रहा हो । | जा रहे हो । | जा रहे हों । |

■ भविष्यत् काल

| कालभेद | मैं | तू/वह | तुम | हम/आप/वे |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | जाऊँगा । | जाएगा । | जाओगे । | जाएँगे । |
| संभाव्य | जाऊँ । | जाए । | जाओ । | जाएँ । |
| हेतुहेतुमद् | जाऊँ । | जाए । | जाओ । | जाएँ । |

**'पढ़ना' (सकर्मक क्रिया, पुंलिंग)**

■ भूत काल

| कालभेद | मैं | तू/वह | तुम | हम/आप/वे |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | ने पढ़ा । | ने पढ़ा । | ने पढ़ा । | ने पढ़ा । |
| आसन्न | ने पढ़ा है । | ने पढ़ा है । | ने पढ़ा है । | ने पढ़ा है । |
| पूर्ण | ने पढ़ा था । | ने पढ़ा था । | ने पढ़ा था । | ने पढ़ा था । |
| अपूर्ण | पढ़ता था । | पढ़ता था । | पढ़ते थे । | पढ़ते थे । |
| | पढ़ रहा था । | पढ़ रहा था । | पढ़ रहे थे । | पढ़ रहे थे । |
| संदिग्ध | ने पढ़ा होगा । | ने पढ़ा होगा । | ने पढ़ा होगा । | ने पढ़ा होगा । |
| हेतुहेतुमद् | पढ़ता । | पढ़ता । | पढ़ते । | पढ़ते । |
| | ने पढ़ा होता । | ने पढ़ा होता । | ने पढ़ा होता । | ने पढ़ा होता । |

■ वर्तमान काल

| कालभेद | मैं | तू/वह | तुम | हम/आप/वे |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | पढ़ता हूँ । | पढ़ता है । | पढ़ते हो । | पढ़ते हैं । |
| तात्कालिक | पढ़ रहा हूँ । | पढ़ रहा है । | पढ़ रहे हो । | पढ़ रहे हैं । |
| संदिग्ध | पढ़ता होऊँगा । | पढ़ता होगा । | पढ़ते होगे/होंगे । | पढ़ते होंगे । |
| | पढ़ता हूँगा । | | | |
| | पढ़ रहा होऊँगा । | पढ़ रहा होगा । | पढ़ रहे होगे/होंगे । | पढ़ रहे होंगे । |
| | पढ़ रहा हूँगा । | | | |
| संभाव्य | पढ़ता होऊँ । | पढ़ता हो । | पढ़ते हो । | पढ़ते हों । |
| | पढ़ रहा होऊँ । | पढ़ रहा हो । | पढ़ रहे हो । | पढ़ रहे हों । |

■ **भविष्यत् काल**

| **कालभेद** | **मैं** | **तू/वह** | **तुम** | **हम/आप/वे** |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | पढ़ूँगा । | पढ़ेगा । | पढ़ोगे । | पढ़ेंगे । |
| संभाव्य | पढ़ूँ । | पढ़े । | पढ़ो । | पढ़ें । |
| हेतुहेतुमद | पढ़ूँ । | पढ़े । | पढ़ो । | पढ़ें । |

# अभ्यास

1. क्रिया किसे कहते हैं ? सोदाहरण बताइए ।

2. धातु किसे कहते हैं ? पाँच उदाहरण दीजिए ।

3. **निम्नलिखित क्रियाओं में से अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं को अलग-अलग कीजिए :**

   देखना, रोना, दौड़ना, खुलना, बेचना, खरीदना, धकेलना, रौंदना, आना, जाना

4. **निम्नलिखित क्रियाओं में से संयुक्त क्रियाओं को छाँटिए :**

   गिरना, गिर पड़ना, कराना, कर बैठना, खा चुकना, हथियाना, लिखाना, अनुरोध करना

5. **निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य के वाक्यों को अलग-अलग कीजिए :**

   (क) हिमालय भारत के उत्तर में है ।

   (ख) लड़के जल्दी चले गए ।

   (ग) रावण राम से मारा गया ।

(घ) इतनी धूप में मुझसे चला नहीं जाएगा ।

(ङ) कमला नाचना चाहती थी ।

(च) मिठाई बनाई गई ।

(छ) कल तक चोर पकड़े जाएँगे ।

(ज) उससे हँसा नहीं जाता ।

6. **निम्नलिखित क्रियाओं से प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनाइए :**

ओढ़ना, घूमना, गिरना, सुनना, देखना, सीना, छूना, लेटना, सीखना, बैठना ।

7. भूतकाल के भेदों का उल्लेख करते हुए प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए ।

8. **निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :**

उदाहरण – लीला रोटी खाती है ।

लीला ने रोटी खाई ।

लीला केला खाती है ।

लीला ने केला खाया ।

(i) माँ खीर बनाती है ।

(ii) घोड़े चना खाते हैं ।

(iii) रमेश पपीता खाता है ।

(iv) वह नाटक देखता है ।

(v) अध्यापक कहानी सुनाते हैं ।

**9. 'क' स्तंभ में कुछ वाक्य और 'ख' स्तंभ में कालों के नाम दिए गए हैं । वाक्य के साथ सही काल का मिलान करके लिखिए :**

| **'क' स्तंभ** | **'ख' स्तंभ** |
|---|---|
| लड़की ने पढ़ा था । | संदिग्ध वर्तमान |
| वह गया होगा । | पूर्ण भूत |
| लड़के पढ़ते थे । | संदिग्ध भूत |
| वे गीत गाते होंगे । | भविष्यत् |
| मैं पुरी जाऊँगी । | अपूर्ण भूत |

**10. निर्देशानुसार वाक्यों को बदलिए :**

(i) मैं जरूर जाऊँगी । (सामान्य भूत में)

(ii) बच्चा रोता है । (सामान्य भविष्यत् में)

(iii) वे पढ़ते होंगे । (संदिग्ध भूत में)

(iv) तुम जाते तो मैं आता । (संभाव्य भविष्यत् में)

(v) लड़की जा रही है । (अपूर्ण भूत में)

●

# अव्यय

वाक्य में कुछ पद होते हैं, जिन पर लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । अर्थात् इनका कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता । ऐसे पदों को अविकारी या अव्यय- पद कहते हैं ।

अव्यय चार प्रकार के हैं ।

(1) क्रिया विशेषण

(2) संबंधबोधक

(3) समुच्चयबोधक

(4) विस्मयादिबोधक

## क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता बताने वाले पद को क्रिया-विशेषण कहते हैं ।

क्रिया-विशेषण चार प्रकार के हैं ।

(1) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(2) कालवाचक क्रिया विशेषण

(3) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(4) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

**1. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण**

ये दो प्रकार के हैं ।

(i) स्थितिवाचक – यहाँ, वहाँ, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आगे, पीछे, साथ, पास, निकट, सर्वत्र

(ii) दिशावाचक – इधर, उधर, दूर, बाएँ, दाएँ, उस ओर, चारों ओर

**2.** **कालवाचक क्रिया-विशेषण –** ये तीन प्रकार के हैं –

(i) समयवाचक – आज, कल, परसों, सुबह, शीघ्र, अब, तब, अभी, तुरंत, दोपहर को, रविवार को, पहले, पीछे ।

(ii) अवधिवाचक – आजकल, नित्य, सदा, दिन भर, सुबह से, शाम तक, दो घंटे तक

(iii) पौनःपुन्यवाचक – बार-बार, प्रायः, कई बार, हर बार, प्रति दिन, अक्सर, बहुधा

**3.** **रीतिवाचक क्रियाविशेषण :**

ये नौ प्रकार के हैं ।

(i) **प्रकारवाचक** – ऐसे, वैसे, जैसे, कैसे, धीरे-धीरे, जैसे-तैसे, यों ही, कुशलतापूर्वक, ध्यान से, जोर से, प्रेम से, अच्छी तरह, रोते हुए, पैदल, हँसते हुए ।

(ii) **निश्चयवाचक** – अवश्य, जरूर, सचमुच, यथार्थतः, वस्तुतः, निस्सन्देह, बेशक, वास्तव में, दरअसल, अलबत्ता, यथार्थ में, असल में, बिलकुल, निश्चित रूप से ।

(iii) **अनिश्चयवाचक** – कदाचित्, शायद, संभवतः, यथासम्भव, अंदाजन, हो सकता है, संभव है ।

(iv) **स्वीकृतिवाचक** – हाँ, अच्छा, सही, ठीक ।

(v) **निषेधवाचक** – न, नहीं, मत, थोड़े ही ।

(vi) **आकस्मिकतावाचक** – सहसा, अचानक, एकाएक ।

(vii) **कारणवाचक** – क्योंकि, अतः इसलिए, मजबूरन ।

(viii) **प्रश्नवाचक** – कहाँ, कब, किधर, कैसे, क्यों, किसलिए, क्योंकर ।

(ix) **अवधारक** – ही, भर, तक, भी, पर्यन्त, मात्र, तो ।

(ये क्रिया की सीमा निर्धारित करते हैं ।)

**4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण :**

ये पाँच प्रकार के हैं ।

(i) **अधिकतावाचक** – अधिक, अति, अतिशय, ज्यादा, खूब, बारम्बार, पुनः पुनः लगातार, पूर्णतया ।

(ii) **न्यूनतावाचक** – थोड़ा, जरा-सा, रंचमात्र, तनिक, लगभग, किंचित, थोड़ा-बहुत, लेशमात्र, कुछ ।

(iii) **पर्याप्तवाचक** – यथेष्ट, काफी, पर्याप्त, बहुत कुछ, पूरा, ठीक ।

(iv) **श्रेणीवाचक** – थोड़ा-थोड़ा, तिल-तिल, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, एक-एक करके, ज्यादा-ज्यादा, यथाक्रम ।

(v) **तुलनावाचक** – कम, अधिक, ज्यादा, इतना, उतना, कितना, जितना, बढ़कर ।

## संबंधबोधक अव्यय

वाक्य में एक पद (संज्ञा या सर्वनाम) से दूसरे पद का सम्बन्ध बतानेवाले अव्यय को 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं ।

अर्थ की दृष्टि से 'संबंधबोधक अव्यय' निम्न प्रकार के हैं :-

(i) **कालवाचक** – के बाद, के आगे, के पीछे, के पहले, के पूर्व, के अवसर पर, से पूर्व, से पहले, के उपरांत, के अनंतर, के पश्चात, के दौरान ।

(ii) **स्थानवाचक** – के आगे, के पीछे, के ऊपर, के नीचे, के अन्दर, के बाहर, के निकट, के बीच, के नजदीक, के समीप, से दूर, की तरफ, की ओर ।

(iii) **कारणवाचक** – के कारण, के लिए, के मारे, के वास्ते, के हेतु, की वजह, के निमित्त ।

(iv) **साधनवाचक** – के द्वारा, के जरिए, के मार्फत, के हाथ, के सहारे ।

(v) **विषयवाचक** – के बारे में, के विषय में, की बाबत, के प्रति, के अधीन, के सम्बन्ध में, के सिलसिले में, के मामले में, के भरोसे ।

(vi) **व्यतिरेकवाचक** – के सिवा, के अलावा, के बिना, के अतिरिक्त, की बजाय, से रहित ।

(vii) **सादृश्यवाचक** – के समान, के अनुसार, के अनुकूल, के सरीखा, के जैसा, के अनुरूप, के तुल्य, के लायक, की तरह, की भाँति, की तुलना में ।

(viii) **विरोधवाचक** – के विरुद्ध, के विपरीत, के खिलाफ, के उलटे ।

(ix) **सहचरवाचक** – के साथ, के सहित, के संग, के समेत, के अधीन

(x) **तुलनावाचक** – की अपेक्षा, की बतिस्बत, के आगे, के सामने, से बढ़कर, से घटकर ।

(xi) **दिशावाचक** – की ओर, की तरफ, के आसपास, के पार ।

(xii) **संग्रहवाचक** – भर, तक, मात्र, पर्यन्त ।

(xiii) **विनिमयवाचक** – की जगह, के बदले

**ध्यान दीजिए :**

- कुछ संबधबोधक अव्ययों के आगे परसर्ग (के, की, से) लुप्त रहते हैं जैसे – धनरहित – धन से रहित, पीठपीछे – पीठ के पीछे ।
- कुछ संबंधबोधक अव्यय परसर्ग के पहले आ जाते हैं जैसे – बिना समझे ।
- (परसर्ग के बिना) स्वतंत्र रूप से आने से 'संबंधबोधक अव्यय' 'क्रियाविशेषण' बन जाता है, जैसे – वह पीछे बैठा ।

## समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय दो या दो से अधिक पदों, पदबंधों, उपवाक्यों को जोड़ता है, उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं । ये दो प्रकार के हैं ।

(1) समानाधिकरण (समान घटकों – पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते है या अलग करते हैं ।)

(2) व्यधिकरण (मुख्य उपवाक्य के साथ आश्रित उपवाक्य को जोड़ते हैं ।

**समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय :**

और, तथा, एवं, व, या, अथवा, किंवा, नहीं तो, क्या-क्या, न-न, कि, भले ही, चाहे, पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, वरन, बल्कि, मगर, फिर, नहीं तो, इसलिए, अतः, अतएव

**व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय :-**

क्योंकि, चूँकि, इसलिए कि, इसलिए, ताकि, कि, यदि / यद्यपि - तथापि/फिर भी, चाहे -पर, यदि-तो, चाहे-तो भी, अगर-तो, जब-तो/तब, जहाँ-वहाँ, चाहे-लेकिन, मानो, यानी, जैसे।

## विस्मयादिबोधक अव्यय

नीचे लिखे वाक्यों को देखिए –

**वाह ! वाह !** तुमने बहुत अच्छा किया ! (हर्ष)

**बाप रे** ! कितना डरावना दृश्य ! (आश्चर्य)

**छी! छी!** तुम्हें ऐसा नहीं करना था । (घृणा)

**हाय !** वह लड़का चल बसा ! (शोक)

रेखांकित अव्यय वक्ता के मनोभाव या मन:स्थिति को व्यक्त करते हैं । इन्हें 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहते हैं । ये वाक्य के आरंभ में आते हैं । वाक्य से इनका सीधा संबंध नहीं होता । विशेष अनुतान के साथ इनका उच्चारण करके हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा

आदि व्यक्त किये जाते हैं । इन अव्ययों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है । ये अव्यय **दस** प्रकार के होते हैं –

(i) **हर्ष** – वाह ! वाह-वाह! शाबाश ! धन्य-धन्य ! बहुत अच्छा ! खूब ! जय जय !

(ii) **शोक** – हाय! हाय-हाय! ओह ! हा-हा! बाप रे! हे राम! त्राहि-त्राहि ! काश! उफ!

(iii) **विस्मय/आश्चर्य** – ऐं! ऐ! हैं ! क्या! वाह! ओह! सच! अच्छा! अरे!

(iv) **अनुमोदन/स्वीकृति** – ठीक ! हाँ ! हाँ-हाँ ! अच्छा ! जी ! हूँ! जी हाँ !

(v) **तिरस्कार/घृणा** – धिक! छि! उफ ! छि-छि ! थू! चुप! हट!

(vi) **अस्वीकृति** – उहूँ! न! न - न !

(vii) **सम्बोधन** – अरे! रे! अजी! तो! अहो! ऐ! हो! री! अरी!

(viii) **अभिवादन** – नमस्कार! राम राम! प्रणाम! हलो! सलाम!

(ix) **आभार** – धन्यवाद! शुक्रिया ! थैंक यू!

(x) **आशीर्वाद** – जियो! भला हो । जीते रहो ! दीर्घायु हो !

# अभ्यास

**1.** अव्यय किसे कहते हैं ? इनके भेदों का सोदाहरण परिचय दीजिए ।

**2. नीचे दिए गए वाक्यों में से क्रियाविशेषणों को छाँटिए :**

(i) उधर मेला लगा है ।

(ii) तुम पीछे क्यों बैठे ?

(iii) सुरेश सभा में पहले पहुँच गया ।

(iv) अचानक वर्षा आ गई ।

(v) मैं जरूर तुम्हारी सहायता करूँगा ।

(vi) धूप में मत खेलो ।

(vii) बच्चे दौड़ते हुए आए ।

(viii) मैंने खूब खा लिया ।

(ix) कक्षा में लगभग चालीस विद्यार्थी थे ।

(x) हाथी धीरे-धीरे आ रहा है ।

**3. निम्नलिखित वाक्यों में से संबंधसूचक अव्यय छाँटिए :**

(i) उसके पीछे कोई नहीं था ।

(ii) लड़की के निमित्त कलम खरीदी गई ।

(iii) नौकर के हाथ चिट्ठी भेज दो ।

(iv) यहाँ कुसुम के अलावा और कोई लड़की नहीं है ।

(v) बच्चे नदी की तरफ चल पड़े ।

**4. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चयबोधक अव्यय छाँटिए :-**

(i) विधु और विनोद ही कक्षा में पढ़ते हैं ।

(ii) तुम कटक जाओ, नहीं तो मैं जाऊँगा ।

(iii) वह अच्छा पढ़ता है, लेकिन देर से उठता है ।

(iv) मैं कलम या पेन्सिल खरीदूँगा ।

(v) क्या बूढ़े क्या बच्चे, सभी गर्मी से परेशान हैं ।

(vi) चाहे तुम बुरा मानो, मैं तो कल आ नहीं पाऊँगा ।

(vii) चूँकि वह गरीब है, इसलिए इतना चंदा दे नहीं सकता ।

(viii) अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुम्हें उधार दे नहीं सकता ।

(ix) वह ऐसा बोलता है मानो कोयल कूक रही हो ।

(x) यद्यपि आज मौसम खराब है, फिर भी मैं चला जाऊँगा ।

**5.** विस्मय/आश्चर्य के अर्थ में दो विस्मयादिबोधक वाक्य लिखिए ।

●